International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 4, Issue 12, December 2017
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

खरगोन जिले में प्रधानमंत्री रोजगार योजना की आवष्यकता

डॉ. रितेष जॉचपुरे

सहायक प्राध्यापक कैम्पस ऑफ बेस्ट मोरल कॉलेज बैड़िया

शिक्षित बेरोजगार युवंको/युवतियों को नाममात्र की मार्जिन मनी व आसान शर्तो पर बैकों से ऋण सहायता उपलब्ध करवाना ताकि वे युवक स्वंय का रोजगार स्थापित कर सके, इसी उद्रेष्य को लेकर प्रधानमंत्री रोजगार योजना 2 अक्टूबर, 1993 से देष मे लागू की गई है। वर्तमान समय मे बेरोजगारी की समस्या का सामना प्रत्येक देष को चाहे वह विकसित हो या विकासषील , करना पड़ रहा है।बेरोजगारी की भयावहता का अनुमान विलियम बेवरिज के इस कथन से सहज ही लगाया जा सकता है'' संसार मे पॉच आर्थिक राक्षस सदैव मनुष्य जाति को ग्रसित करने को तैयार रहते है– निर्धनता , रोग, अज्ञानता , गन्दगी और बेरोजगारी परन्तु सबसे भंयकर राक्षस बेकारी का है''

बेकारी का अर्थ है उन लोगो को जो काम करने के योग्य है और कार्य करना चाहते है, उन्हे प्रचलित मजदूरी दर पर कार्य न मिले । अतः हम कह सकते है' कि बेरोजगारी मे वे लोग तो सम्मिलित है जिन्हे कार्य नही मिला है परन्तु इसमे वे लोग भी सम्मिलित किये जाते है जिन्हे अपनी योग्यता के अनूसार प्रचलित मजदूरी दर पर कार्य न मिल पाया हो।

भारत मे जनसंख्या वृद्धि के साथ – साथ मानवीय संसाधन की वृद्धि तो हुई है, परन्तु तद्नुसार भूमि , पूॅजी , तकनीकी ज्ञान व उद्यम आदि की वृद्धि नही हो पाई है अतः देष मे बेरोजगारी बढ रही है। कृषि व ग्रामीण क्षेत्रो मे जनसंख्या वृद्धि की दर अधिक होने के कारण वहॉ बेरोजगारी अधिक है और निकट भविष्य मे भी इस समस्या के बने रहनें की सम्भावना है।

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

जिले में बेरोजगार व्यक्ति –

खरगोन जिले मे रोजगार कार्यालय में पंजीकृत बेरोजगारों की जानकारी निम्न सारणी से ज्ञात होती है–

रोजगार कार्यालय खरगोन मे पंजीकृत बेरोजगार

वर्ष	पंजीकृत बेरोजगारो की संख्या	परिवर्तन प्रतिषत
1994	42320	–
1995	55520	+31
1996	53407	–3.80
1997	53186	–0.40
1998	55334	+4.03
1999	47672	–13.85
2000	29454	–38.22
2001	29921	+1.58
2002	30733	+2.71
2003	33967	+10.52
2004	33301	–1.97
2005	33230	–.22
2006	36792	+10.71
स्त्रोत – जिला सांख्यिकी पुस्तिकाएं		

सारणी से स्पष्ट है कि खरगोन जिले में पजीकृत बेरोजगारी की संख्या में परिवर्तन की कोई निष्चित दिषा नही रही है। कभी इसमें अचानक अत्यधिक कमी आई है तो कभी अत्यधिक वृद्धि हुई है, परन्तु जिले में सदैव ही बेरोजगारों की एक बडी संख्या रही है।जिले में बेरोजगारो की संख्या में सर्वाधिक धनात्मक परिवर्तन सन् 1995 में व सबसे कम धनात्मक परिवर्तन वर्ष 2001 मे हुआ जबकि वर्ष 2000 में सर्वाधिक ऋणात्मक परिवर्तन एवं वर्ष 2005 में न्यूनतम ऋणात्मक परिवर्तन हुआ है। किसी व्यक्ति की आजीविका के दो साधन हो सकते है– या तो वह वेतन या मजदूरी आधारित कोई कार्य करे या फिर अपना स्वंय का कोई उद्योग /व्यापार अथवा सेवा कार्य प्रारम्भ करे । बेरोजगारी की दस विकराल स्थिति पर वेतन आधारित रोजगार से नियन्त्रण पाना और इतनी बड़ी संख्या में रोजगार के साधनों का सृनज करना एक कठिन व गुरूतर कार्य है। अतः स्वरोजगार के लिये युवको को प्रेरित करना उक अत्यन्त व्यावहारिक उपाय माना जा सकता है। चुकिं प्रधानमंत्री रोजगार योजना षिक्षित बेरोजगार युवाओ को ऋण सहायता उपलब्ध करवा कर स्वरोजगार हेतु प्रेरित करती है, अतः खरगोन जिले सहित सम्पूर्ण देष के लिये यह योजना अत्यनत महत्व रखती है।

खरगोन जिले की कार्यषील व गैर कार्यषील जनंसख्या –

खरगोन जिले की कार्यषील व गैर कार्यषील जनसंख्या निम्नानुसार है–

जिले की कार्यषील व गैर कार्यषील जनसंख्या

जनसंख्या विवरण	पुरूष	स्त्री	कुल	प्रतिशत
कार्यषील	376426	213024	589450	38.54
सीमान्त कार्यषील	33844	81145	114989	7.52
गैर कार्यषील	374334	450789	825123	53.94
योग	**784604**	**744958**	**1529562**	**100**

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि खरगोन जिले में कार्यषील व्यक्तियो का प्रतिषत मात्रा 38.6+7.5 = 46.1 प्रतिषत है जबकि गैर कार्यषील व्यक्तियो का प्रतिषत 53.9 है। इसमें आश्रित जनसंख्या की अधिकता की जानकारी मिलती है। परिवार में कमाने वाले कम व खाने वाले अधिक व्यक्ति है। यह परिरिथति उचित नही कही जा सकती । आश्रितों की अधिकता के कारण जिले में गरीबी है। गरीबी के कारण कई लोग जीवन की बुनियादी आवष्यकताओ से भी वंचित है और वे न्यूनतम जीवन स्तर से भी नीचे जीवन यापन करने के लिये मजबूर है। गरीबी के बारे में लेस्टर ब्राउन ने ठीक ही कहा है – गरीबी निराषा है ऐसे पिता की जो दरिद्र देष मे उत्पन्न हुआ है, जिसे सात व्यक्तियो के परिवार का पालन करना है जो बेरोजगारों की बढती भीड़ में शामिल होता है और जिसके सामने बेरोजगारी की क्षतिपूर्ति की कोई सम्भावना नही है । गरीबी लालसा है ऐसे नवयुवक बालक की जो गॉव के विद्यालय के बाहर तो खेलता है पर उस विद्यालय में प्रवेष नही कर सकता क्योकि उसके माता पिता के पास पाठय पुस्तकें खरीदने के लिये पैसे नही है। गरीबी उन माता पिता का शोक है जो अपने तीन वर्ष के बालक को साधारण सी बचपन की बीमारी से मरते तो देख सकते है..... पर इलाज नही करा सकते। निर्धनता को दूर किये बिना जिले का विकास सम्भव नही है।आश्रितता को कम करने के लिये व निर्धनता को दूर करने व स्वरोजगार योजनाओं की जिले को अत्यन्त आवष्यकता है। अतः इस टष्टिकोण से प्रधानमंत्री रोजगार योजना का जिले के लिये अत्यधिक महत्व है।

सन्दर्भ ग्रन्थ –

(1) प्रधानमंत्री रोजगार योजना का आर्थिक आलोचनात्मक अध्धयन (खरगोन जिले के विषेष सन्दर्भ में 1993–2006) शोधकर्ता रितेष जॉचपुरे निर्देषक डॉ. एम.एल. चौधरी।

(2) जिला सांख्यिकी पुस्तिकाऐ वर्ष 1993–2006 प्रकाषक जिला सांख्यिकी कार्यालय खरगोन (म.प्र)

(3) सेन अमर्त्य आर्थिक विषमताऍ प्रकाषक राजपाल एण्ड सन्स कष्मीरी गेट दिल्ली